भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 55
शुक्रवार, 21 जून, 2019 को उत्तर दिए जाने के लिए

वर्षा में गिरावट

55. श्री प्रवेश साहिब सिंह वर्माः

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या देश भर में औसत वर्षा में गिरावट आ रही है और यदि हां, तो इसके लिए कौन से कारक जिम्मेदार हैं;

(ख) क्या कोई मौजूदा तंत्र है जहां किसानों को उनके संबंधित क्षेत्रों में कृषि हेतु वर्षा के अनुमान के लिए मौसम संबंधी सहायता प्रदान की जाती है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या भारत में कृषि और अन्य क्षेत्रों में अलग-अलग वर्षा के प्रतिशत के संबंध में कारणों, परिणामों और समाधान के संबंध में कोई अध्ययन किया गया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(डॉ. हर्ष वर्धन)

(क) जी, नहीं। 1901 से 2017 की अवधि के वर्षा के आंकड़ों पर विचार करते हुए पाया गया है कि देश की औसत वर्षा में कोई अधिक कमी नहीं आई है। यह भी पाया गया है कि अखिल भारतीय दक्षिण-पश्चिम मानसून की मौसमी वर्षा में बहुत वृद्धि या कमी की प्रवृत्ति नहीं देखी गई है। तथापि, पिछले 100 से अधिक वर्षों के आंकड़ों के विश्लेषण से बताया गया है कि अखिल भारतीय वर्षा में बहु दशकीय/ नवयुगीन परिवर्तनशीलता है और वर्तमान में यह शुष्क युग में है।

(ख) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के नियंत्रण में भारत मौसम विज्ञान विभाग देश में कृषक समुदाय के लाभ के लिए एक प्रचालनात्मक कृषि-मौसम विज्ञान संबंधी परामर्शी सेवा (एएएस) योजना जैसी ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस) लागू करता है। जीकेएमएस योजना के तहत, सभी जिलों के लिए अगले पांच दिनों तक वर्षा सहित मात्रात्मक जिला स्तर के मौसम के पूर्वानुमान लगाए जाते हैं। मौसम पूर्वानुमान के आधार पर, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (एसएयू), आईसीएआर संस्थानों, आईआईटी आदि में स्थित 130 कृषि-मौसम विज्ञानी क्षेत्र इकाइयों के सहयोग से कृषि-मौसम विज्ञानी परामर्शिकाएं तैयार की जाती हैं और उन्हें ऑल इंडिया रेडियो, दूरदर्शन, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, आईएमडी और एएमएफयू की वेबसाइटों जैसे मल्टीमीडिया चैनलों के माध्यम से और मोबाइल फोन द्वारा एसएमएस के माध्यम से भी कृषक समुदाय को संप्रेषित किया जाता है। लगभग 42 मिलियन किसानों को सीधे एसएमएस के माध्यम से मौसम और कृषि-मौसम विज्ञानी परामर्शिकाओं की जानकारी मिलती है।

(ग) वर्षा परिवर्तन के प्रभाव और इसके परिणाम संबंधी अध्ययन केंद्रीय ड्राईलैंड कृषि अनुसंधान संस्थान (सीआरआईडीए), आईसीएआर, हैदराबाद के पास उपलब्ध हो सकते हैं। ऐसे अध्ययनों के आधार पर सीआरआईडीए ने वर्षा परिवर्तनों के मद्देनजर, किसानों द्वारा अपनाएं जाने हेतु जिला स्तरीय आकस्मिक योजनाएं प्रस्तुत की हैं। इसके अलावा, सीआरआईडीए किसानों को परामर्शिकाओं के द्वारा उपचारात्मक उपायों के माध्यम से ऐसे मुद्दों को हल करने के लिए जलवायु परिवर्तनीय कृषि संबंधी राष्ट्रीय पहल (एनआईसीआरए) को लागू करता है।

****